Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ग़ज़ल शैली की समाज से जुड़ी मानवीय संवेदनाएं

ARUN[1] & DR. SHUCHISMITA SHARMA[2]

1 Research Scholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra.
2 Professor, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra.

सार

संगीत हो या साहित्य दोनों कलाओं में ग़ज़ल विधा की अपनी ही श्रेष्ठता है। वर्तमान समाज के अनेकों संवेगों को ग़ज़ल रूपी संवेदना काफी हद तक स्पर्श करती है। भारतीय साहित्य एवं संगीत जगत में ग़ज़ल को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है। आधुनिक ग़ज़लों में सामाजिक पर्याय में समाज से जुड़े मानव जीवन के प्रत्येक पहलू ईषा, द्वेष, प्यार, अच्छाई, बुराई, दहेज, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषमताओं का वर्णन किया है। शायरों ने अपनी ग़ज़लों में मानव से जुड़ी हर प्रकार की संवेदनाओं को ग़ज़लों में लिखने का प्रयास किया है। सामान्यतः ग़ज़ल को मोहब्बत, हुस्न, दर्द और जवानी का हाल ब्यान करने का जरिया माना जाता रहा है परंतु आधुनिक ग़ज़लों ने समाज से जुड़े हर प्रकार के पहलू को अपनाया है। इसीलिए समाज में ग़ज़लों को इतनी लोकप्रियता से पढ़ा व सुना जाता है।

मुख्य शब्द: ग़ज़ल, मानवीय संवेदनाएं, संगीत।

भूमिका

ग़ज़ल के इतिहास में नजर डाले तो ग़ज़ल अरबी फारसी की देन हैं इसकी उत्पत्ति 7वीं शताब्दी में अरबी कविता से हुई है। माना जाता है कि यें 'कसीदे' से ही निकली है। कसीदों का अर्थ है किसी की तारीफ में कुछ कहना। पहले शायरों को राजदरबारों में आश्रय दिया जाता था जिस कारण अपनी रोजी-रोटी चलाने के लिए वे शासकों की झूठी तारीफ करता था । शायर औरतों और शराब का जिक्र करते थे जिस से राजा खुश होते थे।

मुगल शासक जब भारत में आए तो अपने साथ फारसी संस्कृति भी लाए। पहले ग़ज़ल अरबी, फारसी तथा उर्दू में लिखी जाती थी मगर समय के साथ-साथ हिंदी तथा कई अन्य भाषाओं में लिखी जाने लगी । भारत में ग़ज़ल का जनक 'अमीर खुसरों' को माना जाता है। अमीर खुसरों ने 7 मुगल शासकों का काल देखा । ग़ज़ल को एक समय में प्रेमिका से वार्तालाप और उसकी सुन्दरता की तारीफ का साधन भी माना जाता था ।

आधुनिक शायर समाज में होने वाली हर मानवीय संवेदना से जुड़ी घटनाओं और परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए अपनी ग़ज़लों की रचना करते हैं। शायर अपनी ग़ज़लों में पारिवारिक संवेदना जिनमें वात्सल्य, सह-अस्तित्व की भावना, पति-पत्नी सम्बन्ध, प्रेमी-प्रेमिका का प्यार, जीवन प्रेरणा तथा समाज का चित्रण करता है। आधुनिक ग़ज़लों में मानवीय संवेदनाओं और राजनैतिक परिस्थितियों को ग़ज़लों में स्थान ज्यादा दिया जाने लगा है।

ग़ज़ल की परिभाषा

ग़ज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है तथा इसमें प्रणय-प्रधान गीतों का समावेश होता है तथा मोहब्बत के जज़्बातों की अभिव्यक्ति है।[1]

यद्यपि अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में आज की ग़ज़ल में प्रतीक के रूप में एक व्यक्ति या एक वस्तु को आधार माना जाता है, किन्तु प्रभाव के स्तर पर उसका क्षेत्र सम्पूर्ण समाज और मानव जाति होती है। इसीलिए वर्तमान काल की ग़ज़लों में हुस्न-इश्क और प्यार की अमराइयों की महक के साथ पारिवारिक प्रेम और देश-प्रेम और विश्व-प्रेम का व्यापक समावेश मिलता है।[2]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ग़ज़ल वास्तव में अभिव्यक्ति की एक खास प्रणाली है कि जो व्यक्तिगत सच्चाइयों के साथ-साथ हमारे सामने सामाजिक बुराइयों को भी प्रस्तुत करती है। ग़ज़ल में ग़ज़ल से जुड़ी मानवीय संवेदनाओं से अभिप्राय उन सभी संदर्भों से है जो समाज से जुड़े होते हैं। आधुनिक ग़ज़ल में समाज से जुड़े हर अच्छे बुरे पहलू को अभिव्यक्ति मिल रही हैं, जो व्यक्ति के जीवन पर सकारात्मक या नकारात्मक किसी भी रूप में गहरा प्रभाव डालते हैं या डाल सकने में समर्थ हैं। बिलखते-भूखे बच्चों, गरीबों की पीड़ा, दूषित राजनीतिक कारण, दायरों में सिमटते मानवीय संबंध, शहरों से गांव तक महलों से झोपड़ी तक आधुनिक ग़ज़ल का विषय बन गये है। अनेक शायरों, गायकों और संगीतकारों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा के रंग में आधुनिक ग़ज़ल के रूप को सजाया संवारा तथा हर प्रकार की संवेदना को महसूस किया और उन संवेदनाओं को अपनी ग़ज़लों में उकेरा।

स्व॰ दुष्यन्त कुमार की मान्यता है कि ग़ज़लों को भूमिका की जरूरत नहीं होनी चाहिए। उर्दू और हिंदी अपने-अपने सिंहासन से उतरकर जब आम आदमी के पास आती है तो उसमें फर्क कर पाना बड़ा मुश्किल होता है। दुष्यन्त कुमार ने तमाम दुव्र्यवस्थाओं पर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व्यवस्थागत पर बहुत करारें व्यंग्य भी किये है।

दुष्यंत कुमार ने अपनी ग़ज़लों में हर विषय को स्थान दिया। दुष्यंत कुमार की "सायें में धूप" पृ॰ 62 हमारे कथन के साथ मिलता है।

कहां तो तय था चरागाँ हर एक घर के लिये,

कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिये।

न हो कमीज तो घुटनों से पेट ढ़कँ लेंगे,

ये लोग कितने मुनासिब हैं, इस सफर के लिये,

खुदा नहीं न सही आदमी का ख्वाब सही,

कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिये।

जिये तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,

मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिये।[3]

आज की ग़ज़ल अब पहले जैसी नहीं रही। अब शायर समाज से जुड़ी मानवीय संवेदनाओं को मद्देनजर रखते हुए ग़ज़लों को लिखते हैं वह ताल ठोककर अमानवीय आचरण के विरूद्ध संघर्ष करने को तैयार है। ग़ज़लें जिंदगी की गहरी धार के बीच में उतरकर उसकी थाह ले जाती है। और आने वाली पीढ़ी को प्रेरित कर जागृत कर रही है।

खलील धनतेजवी की यह ग़ज़ल देश की गरीबी और राजनैतिक विषमताओं पर कटाक्ष करती है। यह ग़ज़ल प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह जी ने भी गायी है।

अब मैं राशन की क़तारों में नज़र आता हूँ

अपने खेतों से बिछड़ने की सजा पाता हूँ

इतनी महंगाई के बाज़ार से कुछ लाता हूँ

अपने बच्चों में उसे बाँट के शरमाता हूँ

अपनी नींदों का लहू पोंछने की कोशिश में

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

जागते-जागते थक जाता हूँ सो जाता हूँ

कोई चादर समझ के खींच ना ले फिर से 'खलील'

मैं कफ़न ओढ़ के फुटपाथ पे सो जाता हूँ।[4]

आज के समाज में जीवन के अस्तित्व के लिए संघर्ष की प्रक्रिया लगातार बढ़ती ही जा रही है।

आज का ग़ज़लकार मानवीय मूल्यों के ह्रास के प्रति चिंतित है। कृत्रिमता व भावशून्यता की कमी जीवन में बढ़ती ही जा रही है। ऐसे गंभीर संदर्भों को जावेद अख्तर साहब इस ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से सफल हुए।

क्यों डरें जिन्दगी में क्या होगा।

कुछ ना होगा तो तज़रूबा होगा

हंसती आंखों में झांक कर देखो

कोई आंसू कहीं छुपा होगा

इन दिनों ना उम्मीद सा हूँ मैं

शायद उसने भी ये सुना होगा।

देखकर तुमकों सोचता हूँ मैं

क्या किसी ने तुम्हें छुआ होगा[5]

ग़ज़ल में धार्मिक संकीर्णता पर भी प्रहार किया है वह किसी खास धर्मावलम्बी का प्रतिनिधित्व नहीं करती। सौदा जफर जैसे शायरों ने साफ शब्दों में कहा है कि

हिन्दू हैं बुत-परस्त, मुसल्माँ खुदा परस्त

पूजूँ में उस किसी को, जो हो आशना-परस्त।[6]

मेरी मिल्लत हैं मुहब्बत, मेरा मजहब इश्क है

ख्वाह हूँ मैं काफिरों में, ख्वाह दिदारों में हूँ।[7]

शायर अपनी ग़ज़लों, कविताओं में मानवीय मूल्यों के हो रहे ह्रास पर अपनी चिंता व्यक्त करता है। मानवता ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म हैं। मानवता की रक्षा के लिए किसी मजहब या धर्म की नहीं अपितु प्रेम की जरूरत है। यहां पर आचार्य भगवत् दुबे के ग़ज़ल संग्रह "कसक" की ग़ज़ल की पंक्तियां प्रस्तुत है।

प्यार से जीत लू जहाँ सारा।

कोई बन्दूक न भाला चाहूं।

आधुनिक परिवेश में मनुष्य का जीवन अस्त-व्यस्त और मशीनी हो गया है। आधुनिक परिवेश में जीवन की रफ्तार इतनी तेज हो गई है कि आदमी को अपने परिवार व स्वयं के लिए भी समय नहीं बचता। कमाने के लिए अपने घरों से मिलों दूर जाना पड़ता है। अक्सर लोग आपस में बात करते हुए कहते हैं कि अब तो जीवन में सिर्फ समस्याएँ और परेशानियाँ ही रह गयी हैं जिदंगी के सबसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

खुशनुम पल तो बचपन के होते है। जिसमें मनुष्य बेफ्रिक होके जीता है। 'सुदर्शन फाकिर' की नज़्म में इन भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सफल होती है। जिसको प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक ''जगजीत सिंह'' ने गाया है।

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो

भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी

मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन

वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी

मुहल्ले की सबसे पुरानी निशानी

वो बुढ़िया जिसे बच्चे कहते थे नानी

वो नानी की बातों में परियों का डेरा

वो चेहरे की झुर्रियों में सदियों का पहरा

भुलाए नहीं भूल सकता है कोई

वो छोटी सी रातें, वो लंबी कहानी

कड़ी धूप में अपने घर से निकलना

वो चिड़िया, वो बुलबुल, वो तितली पकड़ना

वो गुड़िया की शादी पे लड़ना-झगड़ना

वो झूलों से गिरना, वो गिर के संभलना

वो पीतल के छल्लों के प्यारे से तोहफे

वो टूटी हुई चूड़ियों की निशानी

कभी रेत के ऊँचे टीलों पे जाना

घरौंदे बनाना, बना के मिटाना

वो मासूम चाहत की तस्वीर अपनी

वो ख्वाबों-खिलौनों की जागीर अपनी

ना दुनिया का गम था, ना रिश्तों के बन्धन

बड़ी खूबसूरत थी वो जिन्दगानी।[8]

शहरों में बढ़ते अकेलेपन की समस्या बढ़ती जा रही है। जो व्यक्ति को मानसिक रूप से बीमार कर रही है। आज के दौर में अकेलापन किसी महामारी से कम नहीं हैं। पारिवारिक सम्बन्धों के टूटने, प्रेमी प्रेमिका का विरह, मित्रता में धोखाधड़ी, जीवन में कृत्रिमता व भावशून्यता की मात्रा बढ़ती जा रही है। जिस के चलते गाँवों की अपेक्षा शहरों में व्यक्ति ज्यादा अकेलेपन का शिकार

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

होता है वह अपनी भावनाओं को किसी दूसरे से साँझा करने से भी संकोच करता है। गुलजार द्वारा लिखित यह गजल स्पष्ट करती है कि आज का मनुष्य कितना अकेला महसूस कर रहा है।

जिंदगी यूँ हुई बसर तन्हा
काफिला साथ और सफ़र तन्हा
अपने साये से चैंक जाते हैं
उम्र गुजारी हैं इस क़दर तन्हा
रात भर बातें करते हैं तारे
रात काटे कोई किधर तन्हा
डूबने वाले पार जा उतरे
नक़श-ए-पा अपने छोड़ कर तन्हा
दिन गुजरता नहीं है लोगों में
रात होती नहीं बसर तन्हा
हम ने दरवाज़े तक तो देखा था
फिर न जाने गए किधर तन्हा ।।[9]

निष्कर्ष

अतः संक्षेप में कह सकते है चाहे सांगीतिक या साहित्यिक दोनों कलाओं में ग़ज़ल की अपनी लोकप्रियता है। ग़ज़लों में मानव की समाज से जुड़ी संपूर्ण संवेदनाओं तथा निष्कपट अनुभूतियों की सरल व स्वाभाविक अभिव्यक्ति दृष्टव्य होती है। ग़ज़लों में सामाजिक यथार्थ के समाज से जुड़े मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को अपनाया गया है। इसी कारण ग़ज़ल विद्या में आम जनता की दिलचस्पी व लगाव स्पष्ट नजर आता है।

सन्दर्भ

1 डॉ. श० श्री परांजपे, संगीत ग़ज़ल अंक, 1978, पृ० 7
2 अब्दुल अहद खां खलील, उर्दू ग़ज़ल के 50 साल, मकतबा-ए-कल्मिान, लखनऊ, 1961, पृ० 52
3 स्व० दुष्यंत कुमार, साये में धूप, रामकृष्ण प्रकाशन, आंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ० 62
4 Ab Mein Rashan Ki Qataron Mein Nazan Aata Hoon, Youtube, uploaded by Saregama Ghazal, 2013, https://youtu.be/Jbw40RIV7 jo?si=mCylB2e1BJ10fJtR
5 जावेद अख्तर, क्यों डरे जिंदगी में क्या होगा, मई 2018 https://poetistic.com/javed-akhtar-ghazal/kyon-daren-zindgi-main-kya-hoga.
6 कु० विजय ठाकुर, संगीत (जनवरी 1967) ग़ज़ल: प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम, पृ० 25
7 कु० विजय ठाकुर, संगीत (जनवरी 1967) ग़ज़ल: प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम, पृ० 25
8 woh kaghaz ki kashti- The Latest (Jagit Singh & Chitra Singh) Official Song, Youtube, uploaded by sonymusicindiaVEVO,2017 http://youtube./xEdAiJiwkDE
9 गुलजार, चाँद पुखराज का, रूपा एंड कम्पनी प्रकाशन, 1995, पृ० 181